नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

धारणा गायन शैली का उद्भव एवं विकास

हरमनजोत कौर

शोधार्थी, संगीत विभाग,
अकाल कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड सोशल साइंसिस
इटरनल यूनिवर्सिटी, बड़ू साहिब, हिमाचल प्रदेश, भारत

डॉ. रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग,
अकाल कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड सोशल साइंसिस
इटरनल यूनिवर्सिटी, बड़ू साहिब, हिमाचल प्रदेश, भारत

शोध-पत्र

सिक्ख गुरु साहिबान की पावन भूमि पंजाब में भक्ति संगीत की जो रस-धारा है वह निरंतर बहती रहती है। सन् 1469, श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से इस भूमि पर सिक्ख धर्म और गुरमत संगीत की शुरूआत हुई। गुरमत का अक्षरशः गुरु का मत, उनके विचार, सोच, समझ है जिसका मूल उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति है। जिसकी अभिव्यक्त विविध गायन शैलियों के माध्यम से होती है। गुरमत संगीत में मूल रूप से कीर्तन परंपरा के दो प्रकार है - राग आधारित और लोक धुन आधारित। राग आधारित कीर्तन में मंगलाचरण, धमार गायन शैली, पडताल गायन शैली, ख्याल गायन शैली और लोक धुन आधारित कीर्तन में लाँवा, अष्टपदियाँ, करहले, घोडीयाँ, वारां और धारणा आदि का गायन किया जाता है। धारणा गायन शैली एक ऐसी गायन शैली है जिसका मूल उद्देश्य गुरमत का प्रचार- प्रसार जन-जन तक पहुँचाना है। धारणा गायन शैली में सिक्ख संप्रदाय के विभिन्न धर्मग्रंथों की बाणी जैसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी, दसम ग्रंथ, भाई नंद लाल जी की बाणी, भाई गुरदास जी की वाराँ आदि का अर्थ समझ उसका सरलीकरण एक-दो पंक्तियों में होता है और इन पंक्तियो को संगीतिक धुनों में लय बँध किया जाता है, जिसकी धुन आकर्षित होती है जो सरलता से लोगों को अध्यात्म से जोड़ती है। इस शैली के माध्यम से सिक्ख इतिहास और नैतिक गुणों को सरल रूप से लोगों तक पहुँचाया जाता है। इसमें लोग धुनों तथा सरल भाषा का प्रयोग होता है, जिस को समझना लोगों के लिए आसान होता है। इसका गायन मुख्य रूप से कीर्तन मंचों पर किया जाता है। इसमें एक प्रमुख कीर्तनकार तथा कुछ साथी होते है।

धारणा का गायन दो प्रकार से किया जाता है- पहला जिसमें शान एंव साखी का उच्चारण नहीं किया जाता है–जैसे प्रभात फेरी, जो पहले गुरु साहिबान श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश उत्सव के सम्बंध में फेरी निकाली जाती है जिसमें खाली धारणा का ही गायन किया जाता है। दुसरा जिसमें शान एंव साखी का उच्चारण परंपरागत रूप से किया जाता है–जैसे कीर्तन मंचों पर, जिसमें पहले शान का वादन, साखी का उच्चारण और इसके पश्चात धारणा का गायन किया जाता है।

'धारणा एक ऐसी गायन शैली है जिस से लोग आसानी से आध्यात्म के साथ जुडने लगते है क्योकि धारणा एक विचार या सोच है जो लोगों को आसानी से प्रेरित करती है, अगर हम लोगों की ही तरजे, उनकी ही सरल भाषा लेकर उनको सांगीतिक धुनों में लय-बद्ध करें, तो यह धारणा है।'(जसवंत सिंह)

उदाहरणस्वरूप

तू मेरा राखा जी,
सभनी थाई।

(भावार्थ- इस धारणा में 'तू' शब्द वाहिगुरु जी को संबोधित है कि वाहिगुरु (अकाल पुरख) जी ही है, जो सबकी हर जगह रक्षा करते हैं)

इस धारणा की अगर हम भाषा की बात करें तो वह बिल्कुल सरल है, पढते ही पता चल रहा है कि भगवान की बात हो रही जो हर-पल हमारे साथ है। अगर हम इसी धारणा को संगीतिक धुनों में लय- बद्ध करे तो इसका वजन बढ जाता है क्योकि एक धारणा को बोल कर लोगों को बताना और इसी धारणा को गायन कर के लोगो तक पहुँचाना इसमें बहुत अंतर है।

अगर हम धारणा गायन शैली का परंपरागत रुप देखे तो इसका प्रारंभ 'शान' से होता है। शान एक लहरा है, एक नगमा तथा धुन को कहते है जिसकी प्रस्तुति में अलग-अलग वाद्यों जैसे हारमोनियम, चिमटा, ढोलकी, खड़ताल, घण्टी का प्रयोग होता रहा है और वर्तमान समय में

तबला तथा कैसियो (keyboard) का भी इसमें प्रयोग होने लगा है। शान का प्रारंभ मध्य लय से होता है परन्तु धीरे-धीरे इसकी लय बढती है और अति द्रुत तक इसका वादन होता है जिस से श्रोतागण अत्यंत आकर्षित हो जाते हैं। इसके पश्चात 'साखी'(कथाएँ) उच्चारण की जाती है जो हमारे गुरु साहिबानों के मौलिक जीवन, उनके साथी, अनेक गुरसिक्खों एवं भक्तों के अनुभव पर अधारित होती है। जिस में भिन्न-भिन्न प्रसंगों का उल्लेख मिलता है तत्पश्चात उन प्रसंगों से जो शिक्षा हमें मिलती हैं, उन विचारों का भी धारणा में गायन किया जाता हैं।

संत अतर सिंह जी महाराज (मस्तुआना वाले)

'माना जाता है कि धारणा गायन शैली का उद्गम 20वीं शताब्दी के महान संत, अतर सिंह जी मस्तुआना वाले जी द्वारा किया गया। गुरमत संगीत के प्रचार-प्रसार में संत, अतर सिंह जी का विशेष योगदान रहा है। उन्हें देश-विदेश में भ्रमण कर विविध राग अधारित कीर्तनों की सेवा निभाई और जन-जन को गुरमत की शिक्षा दी। जब संत जी मालवे (पंजाब) में आए तो उन्हें आभास हुआ कि वहाँ के बहुत से लोग राग अधारित कीर्तनों को समझने में असमर्थ है जिस कारण वह आध्यात्म से जुड़ नहीं पा रहे है। जिसका विशेष कारण है कि रागों की समझ कुछ लोगों में ही सीमित होती है, इस लिए लोगों को उनकी ही भाषा में समझाना आवश्यक हो गया था। संत जी ने लोगो की ही तरजों को लेकर गुरबाणी का कीर्तन सरल ढंग से धारणा के रूप में किया जिस के परिणाम स्वरूप लोग आध्यात्म के साथ अधिक जुडने लगें'। (संत तेजा सिंह, जन परोपकारी आए, पृष्ठ सं.-63)। संत, रागी, रबाबी, ढाडी आदि सभी गुणीजनों ने इस शैली का सम्मान किया। उस समय से लेकर आज तक धारणाओं का कीर्तन निरंतर चलता आ रहा है।

धारणा गायन के माध्यम से अन्य संतों ने गुरमत का प्रचार-प्रसार किया तथा कर रहे हैं जिनमें संत बाबा अतर सिंह जी महाराज (मस्तुआना वाले और रेरू साहिब वाले), संत ईशर सिंह जी (राडा साहिब वाले), संत गुरदीप सिंह जी (खूबीया नंगल वाले), संत बाबा रंजीत सिंह जी (ढढरियाँ वाले), संत बाबा बलवंत सिंह जी (सिहौणा साहिब वाले), संत बाबा प्यारा सिंह जी (सिरथाले वाले), संत बाबा गुरजंट सिंह जी (मंडवी वाले), संत बाबा रंजीत सिंह जी (ढढरियाँ वाले) के नाम प्रमुख है।

संत ईशर सिंह जी (राडा साहिब वाले) धारणा गायन करते हुए।

'20वीं शताब्दी के संत बाबा ईशर सिंह जी (राडा साहिब वाले) जिन्होंने सभी लोगों को, चाहे वह किसी भी जात के हों, कोई भी रुप-रंग हो, बिना किसी भेद-भाव के, गुरु नानक के उपदेश को धारणा गायन के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। धारणा गायन से संत जी का ईलाही व्यक्तित्व झलकता था। घंटों उस अकाल पुरख(परमात्मा) में लीन रहना तो इनके लिए आम था। दिसंबर 1949 में वह अफ्रीका गए तथा 13 माह लोगों को धारणा गायन से आध्यात्मिक का पाठ पढाया। विद्यालय, चक्तिसा केंदर, गुरद्वारों का निर्माण समाज सेवा के हेतु किया। गुरुद्वारा करमसर साहिब राडा साहिब को कीर्तन केंद्र बनाया। अंतिम स्वासों तक संत जी ने धारणा गायन के माध्यम से गुरमत का प्रचार- प्रसार किया'।(संत मोहन सिंह जी)

संत जी द्वारा गाई कुछ प्रमुख धारणा इस प्रकार है–

1. *नाम जपीऐ ता दूर हुन्दे दुखडे,*
   सेवा करके माण पाई दा।

(भावार्थ-इस धारणा में वाहिगुरु जी के सिमरन पर जोर देते हुए कहा गया है कि जो व्यक्ति वाहिगुरु जी को सिमरता है, उसके सारे कष्ट दूर हो जाते है और दुसरों की मदद करने से हमें मान-सम्मान मिलता है।)

2. *हम ऐसे तू ऐसा माधो*
   हम ऐसे तू ऐसा।

(भावार्थ-इस धारणा में कहा गया है कि जो मनुष्य है उसका जीवन विकारों से भरा हुआ है लेकिन वाहिगुरु जी ही है, जो पाख(पवित्र) हैं।)

3. *धन धन ने उन्हाँ दीआँ मांवा,*
   जिन्हाँ दे पुत नाम जपदे।

(भावार्थ-इस धारणा में उन माताओं को महान बोला गया है जिनके पुत्र वाहिगुरु का सिमरन करते हैं।)

4. *तू ताँ नाम दे जपण नूँ आया*
   माया वाला जाल पै गिया।

(भावार्थ-इस धारणा में कहा गया है कि मनुष्य का जन्म वाहिगुरु का

सिमरन करने के लिए हुआ है, मगर मनुष्य मोह-माया के जाल में ही फस गया है।)

ऐसी बहुत सी धारणाए है, जिनके माध्यम से संत बाबा ईशर सिंह जी ने लोगो को सत्य का रास्ता दिखाया।

(संत बाबा रंजीत सिंह जी (ढढरियाँ वाले) धारणा गायन करते हुए।)

संत बाबा रंजीत सिंह जी ढढरियाँ वाले वर्तमान समय में युवा पीढ़ी के लिए एक मिसाल हैं जिन्होंने 16 वर्ष की उम्र में कीर्तन करना शुरू कर दिया। पंजाब जैसी पवित्र भूमि आज नशे के जाल में जैसे बँध गई है। इस जाल को काटने के लिए संत जी ने, धारणा गायन को एक औषधि(Medicine) के रूप में भी प्रयोग किया। जिससे वे लोगों को शराब, धुप्रमान जैसे भयानक नशे से मुक्त करने का प्रयास कर रहें हैं। जीवन से जुडी सच्चाईयों को भी साखी के माध्यम से बताते और इतनी गंभीरता से गाते कि लोग खीचे चले आते हैं। संत जी द्वारा गाई कुछ प्रमुख धारणा इस प्रकार है-

1. *बख्शीं गुर मेरिआ सेवा ते सिमरन मैनूँ।*

(भावार्थ-इस धारणा में वाहिगुरु से सेवा तथा सिमरन करने का सामर्थ्य पाने की अरदास की गई है।)

2. *मना खोटिया विसाह नहीं तेरा,*
   कौडीयाँ ते फिरे डोलदा।

(भावार्थ-इस धारणा में मन को 'खोटा' कहा गया है जो कि तुच्छ चीजों (कौडीयाँ)की तरफ आकर्षित हो जाता है)

3. *मेरा रुसे न कलगियाँ वाला,*
   जग पाँवे सारा रुस जे।

(भावार्थ-इस धारणा में वर्णन किया गया है कि चाहे पूरा संसार मुझसे रूठ जाये मगर 'वाहिगुरु' कभी न रूठे।)

4. *तती वाह वी लगण न देवे,*
   जिन्हाँ दा राखा आप हो गया।

(भावार्थ- इस धारणा में कहा गया है कि जिसके पालन करता वाहिगुरु जी है उसको कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता।)

ऐसे अनेक ही संत गुरमत का प्रचार-प्रसार धारणा गायन शैली के माध्यम द्वारा कर रहे है। वैसे तो धारणा गायन विविध लोक धुनों पर आधारित होता है परन्तु वर्तमान समय में ऐसा भी देखा गया है कि कुछ लोग धारणा गायन को फिल्मी गीतों की धुनों पर भी गाने लगे है जिस के कारण गुरमत संगीत के मुल स्वरूप को हानि होती नज़र आ रही है। आजकल धारणा में हमें पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग भी देखने को मिलता है, जिस से धारणा गायन के स्वरूप में परिवर्तन आया है। धारणा गायन शैली में गति और ठहराव का एक जो अनोखा सामंजस्य हमें पारंपरिक धारणाओं में देखने को मिलता था वह आधुनिक समय में अलोप सा होता प्रतीत हो रहा है।

उद्देश्य

परंपरागत धारणा गायन शैली की विस्तार पूर्वक जानकारी प्रापत करना। साथ ही गुरमत संगीत में धारणा गायन शैली की भूमिका एवं महत्त्व को भी प्रकाशित करना। इसके अतिरिक्त संत समाज द्वारा धारणा गायन शैली के प्रयोग और इसके शिक्षण प्रभाव का विश्लेषण करना।

शोध विधि

डायरी, पुस्तक, पुराने शोध पत्र, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र आदि द्वारा जानकारी एकत्रित करना। भिन्न-भिन्न गुरुद्वारों के पुस्तक भंडार से जानकारी एकत्रित करना। धारणा गायन शैली का प्रचार-प्रसार कर रहे संतों से साक्षात्कार करना। इसके अतिरिक्त इंटरनट से जानकारी एकत्रित करना।

क्षेत्र

इस शोघ का क्षेत्र धारणा गायन शैली की परंपरा, गायन शैली के विशेष तत्व तथा इसका प्रचार-प्रसार कर रहे विविध संतों तक सीमित है, साथ ही इसकी गायकी में वर्तमान समय में जो बदलाव दृष्टिगोचर हो रहें है उसका भी अवलोकन किया गया है।

शोध परिणाम

धारणा गायन शैली में गायन की सादगी, आवाज की गंभीरता और भावना तीनों ही प्रमुख है। भक्ति संगीत तथा भारतीय संगीत में धारणा गायन शैली ने विशेष योगदान का है। धारणा गायन शैली से श्रोतागण को आंतरिक शांति प्राप्त होती है तथा यह लोगों को अध्यात्म से जोड़ती है।

निष्कर्ष

धारणा गायन शैली का उद्गम संत, अतर सिंह जी मस्तुआना वाले जी द्वारा माना जाता है। धारणा गायन शैली का मुल उद्देश्य गुरमत का प्रचार-प्रसार सरल धुनों के माध्यम से जन-जन तक करना है। शुरुआत में धारणा का गायन कुछ सीमित वाद्यों के साथ होता था धीरे-धीरे इसमें अन्य वाद्यों का प्रयोग भी होने लगा। प्रारंभ में प्रस्तुतीकरण गाँवो, चौपाल आदि स्थानों में ही होता था परंतु धीरे-धीरे कीर्तन मंचों पर भी इसका गायन होने लगा। साथ ही शब्दों और विषयों में भी बदलाव हमें देखने को मिलते है। प्रारंभिक समय में यह गायन शैली अपने शांतमयी स्वरूप के साथ प्रस्तुत होती थी परंतु वर्तमान समय में इसमें तीव्र गति

पर अधिक ज़ोर दिया जा रहा है तथा फ्यूज़न शैली का भी प्रयोग देखने को मिलता है।धारणा गायन शैली का गायन लोक धुनों पर अधारित होता था परंतु वर्तमान समय में कुछ लोग इसका गायन फिल्मी धुनों पर भी करने लगें है जो कि निश्चित रूप से निंदनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, संत बाबा मोहन, 'रूहानी संदेश', प्रकाशन-गुरुद्वारा करमसर रारा साहिब ट्रस्ट के अध्यक्ष संत बाबा तेजा सिंह जी और मंदिर के सभी ट्रस्टी, चौथा संशोधन 1994
2. सिंह, दास संत बलवंत,'मालवा इतिहास', प्रकाशन-संत खालसा दल के रजि. माता गुजरी सराय श्री फतेहगढ़ साहिब, पंजाब, दिसंबर 1996
3. सिंह, संत बाबा ईशर (रारा साहिब वाले), 'दिव्य अमूल्य लाल', प्रकाशन-गुरुद्वारा करमसर रारा साहिब ट्रस्ट, तीसरा संशोधन 1998
4. सिंह, जसवंत, साक्षातकार द्वाराः हरमनजोत कौर (दुरभाष), 24 अगस्त 2025, लुधियाना, पंजाब
5. सिंह, भाई मनवीर, साक्षातकार द्वारा हरमनजोत कौर 28 जुलाई 2025, राडा साहिब, पंजाब
6. सिंह, भाई गोबिन्द, साक्षातकार द्वारा हरमनजोत कौर, 20 अगस्त 2025, पटियाला, पंजाब
7. सिंह, स. उजागर, साक्षातकार द्वारा हरमनजोत कौर, 21 अगस्त 2025, पटियाला, पंजाब
8. सिंह, बाबा रंजीत, tatti vah vi lagan na deve Dharna Accessed on 5.9.2015 https://youtu.be/QHL8lf9gnaI?si=Xdojyow5WD_MsHIz
9. सिंह, बाबा रंजीत, Jinha milea tera naam chitt aave Dharna Accessed on 9.12.2015 https://youtu.be/4jqOBTbVKPw?si=-nrCJbxJTtcsLg1E
10. सिंह, बाबा ईशर, Bhalke Uth ke Dheyave Har ke Dharna Accessed on 2022 https://youtu.be/4jqOBTbVKPw?si=EYlsdDYkzFg9r4Ud
11. सिंह, बाबा ईशर, Chonivandharna vol-6 Popular Dharna, Dharna Accessed on 2020 https://www.youtube.com/watch?v=GcJI7M6bS_A
12. Singh, Sant Baba Balwant, Dharna Kirtan - Sant Baba Balwant Singh Ji Sihode Wale Dharna Accessed on 6 July 2025 https://youtu.be/aixgjob3Ynk?si=XYH1p0kBPIpmCz2J